अर्जुन को नदी पार करना थी तो उस ने अपनी धनुर्विद्या से बाणों का एक सेतु बनाया और रथ सहित नदी पार की । नदी के उसे पर उस की हनुमानजी से भेंट हुई । हनुमाजी से कहा कि भगवान राम यदि इतने ही बड़े धनुर्धारी थे तो मेरे जैसे बाणों का पुल बना सकते थे । तब हनुमानजी ने कहा कि उस काल में मुझसे भी शक्तिशाली वानर होते थे । अर्जुन कहता है कि यदि तुम्हारे चलने से मेरे बाणों का सेतु टूट गया तो मैं खुद को सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर मानना छोड़ दूंगा । तब हनुमानजी उस पर पग रखते हैं कि तभी सेतु टूट जाता है ।